क्यों ठंडी हुई थी धरती 12 हज़ार साल पहले

यह तो सभी मानते हैं कि लगभग 12,000 साल पहले धरती एकदम ठंडी हो गई थी मगर इस बात को लेकर तल्ख विवाद है कि ऐसा क्यों हुआ था। अब कुछ नए प्रमाण मिलने के साथ बहस फिर छिड़ गई है।

ये हैं वे टुकड़े जो उल्का का प्रमाण बताए जा रहे हैं

11,600 से 12,900 साल पहले पृथ्वी की जलवायु में अचानक परिवर्तन आया था। उत्तरी इलाकों का तापमान तो इस एक सदी के दौरान कई डिग्री कम हो गया था। इस अचानक आए जाड़े को यंगर ड्रायस नाम दिया गया है। इस संदर्भ में एक परिकल्पना यह है कि उत्तरी अमरीका के खिसकते ग्लेशियर्स (हिमनदों) के कारण पिघलता बर्फ पानी बनकर आर्क्टिक महासागर में पहुंचा। इसकी वजह से समुद्र में पानी की धाराएं धीमी पड़ गई थीं और उत्तरी गोलार्ध ठंड से ठिठुरने लगा था।

दूसरी परिकल्पना यह है कि उत्तरी अमरीका पर कोई उल्का या धूमकेतु गिरा या ठीक ऊपर आकर फट गया। इसके चलते भयानक आग लगी। इस आग के चलते खूब धुआं और धूल वातावरण में फैले और हिमनद का बंटाढार हो गया। बाद में इस धूल भरे वातावरण के कारण पृथ्वी ठंडी हुई।

अब इन दोनों में से कौन-सी परिकल्पना सही है? अब तक उल्का के गिरने या फटने का कोई सबूत नहीं था। इसलिए ग्लेशियर खिसकने के सिद्धांत को ही स्वीकार किया जाता था। मगर अब ऐसे विस्फोट या टक्कर के कुछ प्रमाण मिले हैं। जैसे 12,000 साल पहले अस्तित्व में रही मानव बसाहटों के अवशेषों के अध्ययन से लगता है कि कोई चीज़ टकराई तो थी। मगर यदि ऐसा हुआ होता तो इस घटना का असर उत्तरी अमरीका के बड़े भूभाग पर होना चाहिए, जिसके प्रमाण नहीं मिलते। हाल ही में 50 शोधकर्ताओं ने खोज की है कि यंगर ड्रायस के समय के ग्रीनलैण्ड के बर्फ में उल्काजनित प्लेटिनम मिलता है।

दरअसल, यीवोन मेलिनोव्स्की ने इस प्रागैतिहासिक जाड़े के बारे में एक वृत्तचित्र देखा और पेनसिल्वेनिया की अपनी ज़मीन से पत्थर के कुछ टुकड़े शोधकर्ताओं को भेजे। इन पत्थरों के विश्लेषण से पता चला है कि ये क्यूबेक (कनाडा) से आए हैं। हेनोवर के डार्टमाउथ कॉलेज के भूवैज्ञानिक मुकुल शर्मा का मत है कि ये चट्टानें ज़रूर किसी चीज़ के पृथ्वी के टकरा जाने के कारण उछली होंगी और यहां-वहां बिखरी होंगी। मगर आलोचकों के मुताबिक सिर्फ कुछ पत्थरों का पाया जाना उल्का-टक्कर का सबूत नहीं माना जा सकता। आखिर यदि उल्का टकराई थी तो एक विशाल गड्ढा तो बना होगा। वह गड्ढा कहां है?

बहरहाल मुकुल शर्मा का यह शोध पत्र प्रकाशित होने जा रहा है क्योंकि शोध पत्रिका का कहना है कि मामला इतना विवादास्पद और खुला है कि हर विचार को सामने आने का मौका मिलना चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***

स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं

वार्षिक सदस्यता **व्यक्तिगत 150 रुपए**
संस्थागत 300 रुपए